Industrial Psychology.

B.A. (Hons) Part-III
Paper-VII group-A
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D. Psychology
D.K. college, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

NATURE, SCOPES, AIMS & PROBLEMS OF INDUSTRIAL-PSYCHOLOGY

औद्योगिक मनोविज्ञान व्यवहृत मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा है, जिसका प्रादुर्भाव 20वीं शदी के प्रारंभ में हुआ। औद्योगिक आन्दोलन के फलस्वरूप पूरी दुनिया के देशों में उद्योग-धंधों का विकास बड़ा ही द्रुतगति से हुआ। इसने मानव का मशीनीकरण करके रख दिया। नतीजतन श्रमिकों का शोषण बढ़ता चला जा रहा था। ऐसी स्थिति में सामाजिक असंतुलन का उत्पन्न होना स्वभाविक था। मानवीय मूल्यों एवं भावनाओं तथा आवश्यकताओं के बीच संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता महसूस होने लगी। इन्हीं परिस्थितियों में औद्योगिक मनोविज्ञान का जन्म हुआ। इसका मूल उद्देश्य यह था कि उद्योग-धंधों में कार्यरत कर्मियों की आवश्यकताओं, भावनाओं एवं मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखते हुए उत्पादन में पर्याप्त वृद्धि की जा सके।

औद्योगिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उद्योगों में लगे श्रमिकों की समस्याओं, व्यवहारों एवं मानसिक स्थितियों का अध्ययन किया जाता है। इसको परिभाषित करते हुए Blum ने कहा है: "Industrial Psychology is simply the application or, extension of Psychological facts and Principles to the problems concerning human relations in business and industry."

इसी तरह हैरेल (Harrell) ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है:-
"Industrial Psychology is a complicated Study of a number of things, but it is always primarily the Study of people - as individuals or in groups - in the work situation."

इसी कड़ी में मेयर्स द्वारा दी गई परिभाषा का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। यह परिभाषा आधुनिक, सुन्दर एवं सटीक है।-

"औद्योगिक मनोविज्ञान व्यवहारिक मनोविज्ञान का सबसे नवीन उदाहरण है, जो समूचे उद्योग में व्याप्त अराजक तत्वों से सम्बन्धित विषयों से संलग्न है। उद्योग का तात्पर्य उसके विस्तृत रूप से है, इसमें सभी प्रकार के कर्मी चाहे कारखाना के हों, कार्यालय के हों या साधारण कर्मचारी सभी सम्मिलित हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने पर उसका स्वरूप जो उभर कर आता है उसे निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:-

(i) औद्योगिक मनोविज्ञान, व्यवहारिक मनोविज्ञान की एक नवीन शाखा है।

(ii) इसके अन्तर्गत शारीरिक एवं मानसिक रूप से श्रम करनेवाले व्यक्तियों का अध्ययन किया जाता है।

(iii) इस शाखा के अन्तर्गत कुछ ऐसे सिद्धान्तों या नियमों का अध्ययन किया जाता है जिससे श्रम करनेवाले व्यक्तियों के व्यवहारों को समझने में सहूलियत होती है।

(iv) इसमें उद्योगों में लगे कर्मियों की समस्याओं का अध्ययन किया जाता है ताकि उनका हल निकालकर उनका जीवन सुखमय बनाया जा सके।

(v) इसके तहत मुख्यतः तीन बातें आती हैं:-

(A) कर्मचारियों का चयन, योग्यता के अनुसार नियुक्ति, एवं वैयक्तिक विभिन्नताओं का खयाल रखते हुए पदोन्नति।

(B) ह्यूमन इंजीनियरिंग के द्वारा मानव एवं मशीन के बीच के सम्बन्धों का अध्ययन।

(C) उद्योग धंधों में मानवीय सम्बन्ध एवं सामाजिक गतिविधियों का अध्ययन।

(vi) औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि लाने के लिए वैज्ञानिक प्रबंधन एवं अन्य उपायों की ढूंढना।

इस प्रकार हम देखते हैं कि औद्योगिक मनोविज्ञान भौतिकवादी एवं मानवतावादी दोनों तथ्यों से लबरेज है।

औद्योगिक मनोविज्ञान का क्षेत्र या विस्तार :-
Scopes of Ind. Psy.

आज मानव जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र है जहाँ मनोविज्ञान का नहीं है। इसी संदर्भ में वाइटल्स (Vitales) ने शायद कहा है :-

"The application of Psychology in Industry is associated with as increasing of individual makeup"

निसंदेह औद्योगिक मनोविज्ञान का विस्तार काफी हो चुका है और दिन प्रतिदिन इसका क्षेत्र विस्तृत होते जा रहा है। औद्योगिक मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र को हम निम्नलिखित बिन्दुओं में बाँटकर अध्ययन कर सकते हैं :-

1. **औद्योगिक मनोविज्ञान का आधार** :- मजदूरों की स्थितियों में सुधार हेतु औद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र को आर्थिक, सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक तत्वों से जोड़ने का प्रयास किया गया ताकि मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाया जा सके। परिणामतः औद्योगिक मनोविज्ञान के विस्तार का आधार तैयार हो गया।

2. **कर्मचारियों की दशा में सुधार** :- श्रमिकों/कर्मचारियों की दशा में सुधार हेतु औद्योगिक मनोविज्ञान में कई पहल किए गए। मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन प्रारंभ हुआ। इससे उनका शोषण रुका और मानवोचित सुविधाएँ मिलने लगी।

3. **भौतिक पक्ष का अध्ययन** :- औद्योगिक मनोविज्ञान उद्योग धंधों के भौतिक पक्ष यानी वातावरणीय कारकों का अध्ययन करता है, ताकि इसके पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों को रोका जा सके और दुर्घटनाओं, अरोचकता, थकान आदि को रोका जा सके और उत्पादन में वृद्धि को प्राप्त किया जा सके। इसके लिए उद्योगों में मौजूद प्रकाश, तापक्रम, शोरगुल, आर्द्रता आदि का अध्ययन किया जाता है तथा उपयुक्त (Adequate) व्यवस्था कराने पर जोर दिया जाता है।

(4) सिद्धान्तों का अध्ययन :- औद्योगिक मनोविज्ञान के विषय वस्तु के तहत हम उन सिद्धान्तों का अध्ययन करते हैं जिसके द्वारा मानवोचित सम्बन्ध को विकसित किया जा सके और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार आदि को विकसित किया जा सके। मालिक एवं मजदूर, कर्मचारी एवं कर्मचारी आदि के बीच संतुलित सम्बन्ध विकसित करानेवाले सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए व्यवहारिक चयन, कार्य विश्लेषण, मार्गदर्शन आदि का अध्ययन किया जाता है।

(5) मनोवृत्तियों एवं प्रेरणाओं का अध्ययन :- औद्योगिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत कर्मचारियों एवं प्रबन्धकों की Attitude and Motives का अध्ययन किया जाता है। इसमें दोनों की नैतिक स्तर का भी ध्यान रखा जाता है। Incentive एवं उसके प्रभाव का अध्ययन भी किया जाता है ताकि कर्मी को काम के अनुरूप प्रोत्साहन देकर खुशहाल बनाया जा सके एवं उत्पादन को भी लक्ष्य के अनुरूप प्राप्त कर लिया जा सके।

(6) मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन :- उद्योगों में कार्यरत कर्मचारियों पर सारा दारमदार होता है। ऐसी स्थिति में उनके मानसिक स्वास्थ्य का संतुलित रहना आवश्यक होता है। इसलिए उनकी मानसिक स्वास्थ्य एवं मनःस्थिति का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

(7) मानवीय सम्बन्धों का अध्ययन :- यह हम जान चुके हैं कि औद्योगिक उन्नति के लिए भौतिक पक्षों के अलावे मानवीय पक्षों का अध्ययन भी आवश्यक है। इसलिए औद्योगिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानवीय पक्ष को प्रगाढ़ बनाने की विशेषतः कोशिश की जाती है। जब तक कर्मचारी-मालिक, कर्मचारी-कर्मचारी, कर्मचारी-अधिकारी, प्रबन्धक-कर्मचारी के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित नहीं होगा लक्ष्य को पाना असंभव है।

(8) विज्ञापन एवं विक्रय :- औद्योगिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उत्पादित वस्तुओं को ग्राहक तक पहुँचाने के उपायों को ढूढना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। इसके लिए उत्पादित वस्तुओं की खपत के लिए विक्रय विज्ञापन के आकर्षक एवं मनोवैज्ञानिक तरीकों का सहारा लिया जाता है। औद्योगिक मनोविज्ञान का यह लोकप्रिय विषय है। उत्पाद की जानकारी उपभोक्ता तक पहुँचाना है।

(9) अन्य क्षेत्र :- उपर्युक्त तथ्यों के अलावे औद्योगिक मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र के तहत मजदूरों के मनोबल, हड़ताल, तालाबंदी, छँटनी, कर्मचारी चयन, कारखाने का निरीक्षण, कुसमायोजन आदि भी औद्योगिक मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

औद्योगिक मनोविज्ञान के उद्देश्य (Aims) :-

औद्योगिक मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य उन सभी समस्याओं का अध्ययन करना है, जिनका सम्बन्ध कर्मचारी और उत्पादन से होता है। इसके निदान के लिये औद्योगिक मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिक कार्यप्रणालियों का खोज किया जाता है। इसके मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

1.) कार्य के लिये योग्य कर्मचारी का चयन करना और योग्यतानुसार काम देना।

2.) कर्मचारियों की स्वास्थ्य के लिहाज से उपयुक्त वातावरण बनाना।

3.) श्रम के महत्व को तरजीह देना और उचित पारिश्रमिक का निर्धारण कराना।

4.) कामगार की थकान, ऊब, अरोचकता, दुर्घटनाओं आदि के कारणों का निवारण करना।

5) कर्मचारियों के असंतोष का निवारण।

7.) औद्योगिक वातावरण को सुखद बनाना।

8.) मशीन एवं मानव के बीच मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध विकसित करना।

9) मालिक एवं मजदूर के बीच सौहार्दपूर्ण मानवोचित सम्बन्ध विकसित करने का उपाय ढूढना।

10) भौतिक पक्ष एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष में संतुलन स्थापित करना।

11) मशीन एवं कर्मचारी में निहित भेद को ध्यान में रखते हुए मानवतावादी दृष्टिकोण को प्रश्रय देना।

12) 'मजदूर राष्ट्र की सम्पदा है' इस तरह के विचार को प्रोत्साहित करना।

Problems of Industrial Psy
औद्योगिक मनोविज्ञान की समस्याएँ

मालिक कम वेतन देकर अधिक कार्य कराना चाहता है, जबकि श्रमिक अधिक पारिश्रमिक चाहता है। इस सर्वविदित समस्या से मालिक एवं मजदूर

की आपसी सम्बन्ध में दरार आ जाता है। यदि समय रहते इसे नहीं पाटा जाता है तो उड़ताल एवं तालाबंदी की नौबत आती है जो किसी भी राष्ट्र के विकास में बहुत बड़ी बाधा बन जाती है। औद्योगिक क्षेत्र की इस समस्या के चार पक्ष हैं :—

(1) मालिक (2) उत्पादन, (3) कर्मचारी (4) औद्योगिक वातावरण। इन्हीं चारों पक्षों से औद्योगिक समस्याएँ सम्बन्धित हैं जिन्हें निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है :—

(1) कर्मचारी तथा कार्य

औद्योगिक मनोविज्ञान की प्रमुख समस्या काम के लिए योग्य कर्मचारियों को चयनित करना है। इसके लिए Vocational Selection एवं Work Analysis का अध्ययन किया जाता है। उन्नत एवं अत्यधिक मशीनों एवं वातावरण का होना आवश्यक है। अतः काम के स्वरूप के अनुसार उचित काम के लिये उचित व्यक्ति का चयन एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण आवश्यक है। पहली समस्या है।

2. कर्मचारी तथा निरीक्षक :-

कर्मचारी एवं निरीक्षक के बीच उचित सम्बन्ध विकसित होना दूसरा प्रमुख समस्या है। इसके लिए Supervisor को कर्मी की मानवीय आवश्यकताओं का ख्याल रखना चाहिए। भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों को सौहार्दपूर्ण एवं सुखद बनाना यह दूसरी समस्या है।

3) कर्मचारी एवं प्रबन्धक :- मील मालिक एवं उसकी मैनेजमेंट की देखभाल करनेवाली टीम अपने काम के प्रति जवाबदेह होना पड़ेगा सारी चीजों का ख्याल रखना होगा। कर्मचारियों की सुरक्षा, स्वास्थ्य अधिकार आदि का ख्याल रखना एवं उचित प्रबन्ध करना तीसरी समस्या है।

4) कर्मचारी एवं कर्मचारी :- कर्मचारी एवं कर्मचारियों के बीच तालमेल बनाये रखना एक बड़ी समस्या होती है। मालिक की कोशिश होती है कि कर्मचारियों में फूट डालकर शोषण किया जाए। इसके लिए वे लड़ाते रहते हैं। अतः उन्हें आपस में मिलकर काम का निपटारा करना चाहिए। आपसी यूनियन आदि को ईमानदारी पूर्वक चलाना चाहिए।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि औद्योगिक

मनोविज्ञान व्यवहृत मनोविज्ञान की वह शाखा है जो कैसे सभी कर्मियों की मानसिक अवस्था एवं व्यवहार का अध्ययन करता है जो किसी भी काम में लगे होते हैं। इसका क्षेत्र दिन प्रतिदिन विस्तार लेता जा रहा है क्योंकि बगैर उद्योग धंधों के विकास के देश का विकास संभव नहीं है।

R Singh
15/07/2020